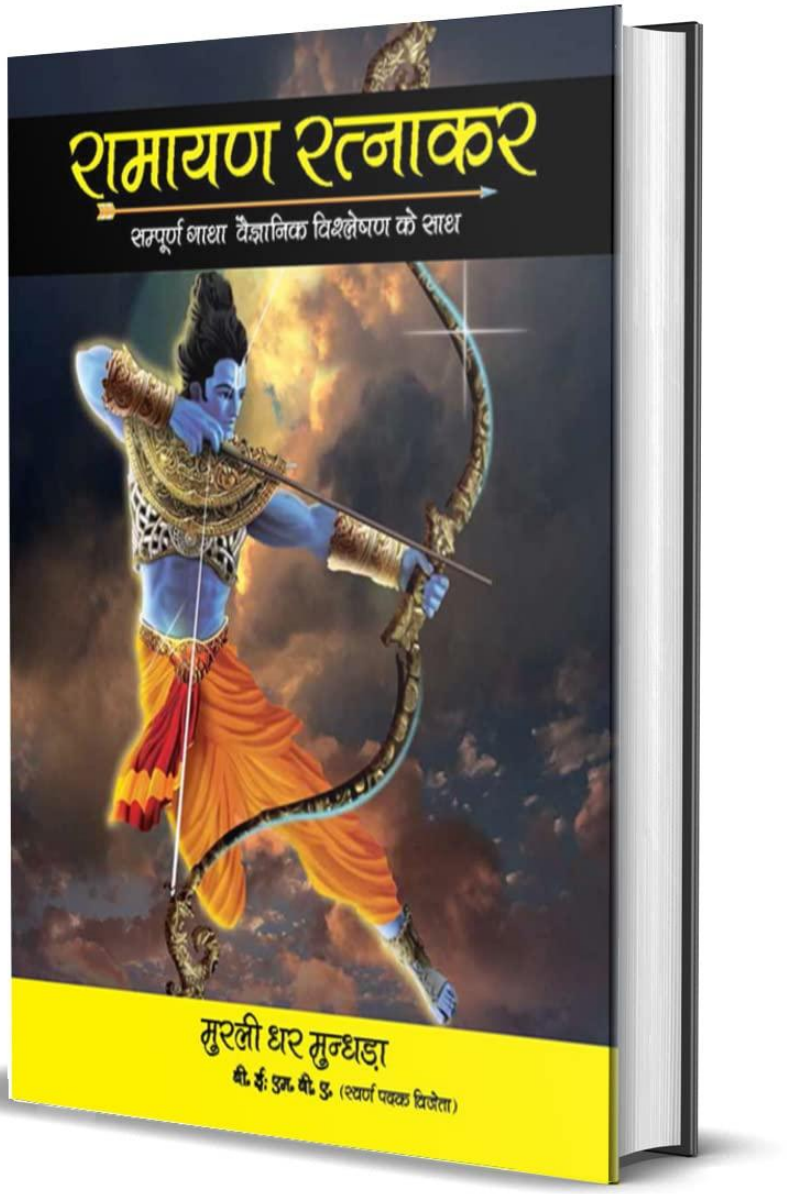
रामायण रत्नाकर
सम्पूर्ण गाथा वैज्ञानिक विश्लेषण के साथ
मुरली धर मुन्धड़ा
बी. ई: एम. बी. ए. (स्वर्ण पदक विजेता)

टीम

सम्पादक : डा॰ कुलदीप कुमार,
सहायकाचार्य संस्कृत विभाग हिमाचलप्रदेश केन्द्रीय विश्व विद्यालय धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश

उपसम्पादक : आचार्य बृजेश कुमार तिवारी
पूर्व संस्कृत आचार्य महर्षि वेद विज्ञान विश्व विद्यापीठम्

समीक्षक:

डा॰ विजय मुन्धड़ा, एम॰ डी॰ (मनोविज्ञान), फरीदाबाद

सरोज मुन्धड़ा, स्नातक (गृह विज्ञान)

अमरेश त्रिपाठी, वैश्विक प्रधान अधिकारी; डेटा विश्लेषण एंव कृत्रिम बुद्धि, जैनपैक्ट

शालिनी मुन्धड़ा, एम॰ डी॰ (आन्तरिक चिकित्सा), किडनी रोग विशेषज्ञ, यू॰ एस॰ ए॰

सौरभ मुन्धड़ा, बी॰ ई; एम॰ बी॰ ए; निर्देशक, सिटी बैंक, हांगकांग

सुहानी मुन्धड़ा, बी॰ ई; (ऑनर्स),

मार्केटिंग विशेषज्ञ:

मधुसूदन झँवर, एफ॰ सी॰ ए; (एम. एस. झँवर एण्ड सन्स असोसियेटस)

दिनेश सोमानी (सोमानी इन्वेस्टमेन्टस), अबोहर (पंजाब) व अन्य कई

कलाकार : 1. विकेश घोष (राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता)

2. आरती लखोटिया, उभरती हुई चित्र कलाकार, मुम्बई

3. आभा झँवर, चित्र कलाकार, उदयपुर

4. राधिका नेवर, सी॰ ए॰ सहायक उपाध्यक्ष, के॰ पी॰ एम॰ जी॰ बैंगलोर

कानूनी सलाहकार

शैलेन्द्र बजाज, एडवोकेट, दिल्ली

पुस्तक के विषय में

ह पुस्तक श्री राम के युग के भावनात्मक और बौद्धिक पक्षों का समन्वय करते हुए इसकी ता
याख्या करने का प्रयास है ताकि इससे ऐसी जीवनोपयोगी शिक्षाओं को ग्रहण किया जा सके
र्वभौम है और आज भी प्रासंगिक हैं। यह पुस्तक इस ऐतिहासिक महाकाव्य के विषय में बौद्धिक
तर्कशील मन मे उठने वाले समस्त प्रश्नों का युक्तियुक्त उत्तर भी देगी।

ह पुस्तक रामायण की महागाथा के मुख्य पात्रों के कार्यों, निर्णयों और विचार–प्रक्रिया का वि
ने के साथ–साथ माननीय संबंधों, धैर्य, करुणा, विनम्रता,त्याग और रणनीतियों के विषय मैं
तर्दृष्टि प्रदान करती है।

पीढ़ी को रामायण का सम्पूर्ण संदर्भ समझाने और उसकी ईमानदारी और प्रा[illegible] को उनके
त करने के लिए यह लिखी गई है। यह उन्हें वास्तविक जीवन में धर्म [illegible] नैतिकता प
के व्यवहारिक लाभों का भी ज्ञान करायेगी ।

पुस्तक आपको एक ऐसे आदर्श साम्राज्य में ले जाएगी जिसका विश्व में कभी अस्तित्व
सम्राटों, राजाओं और प्रजाजनों के संघर्ष और त्याग की चर्चा भी करेगी जो उन्होंने ऐसे कल
ज्य की स्थापना और संरक्षण के लिये किये थे जिसे हम प्रायः रामराज्य कहकर पुकारते हैं। यह
संभावना को भी उन्मुक्त करती है कि आज भी इसे प्राप्त किया जा सकता है यदि लोग इस
ग्रहण करें और न्याय के साथ साथ सत्यनिष्ठा के मार्ग का अनुसरण करें।

ISBN No: 978-819-483-582-0

₹ 699/-